IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 10, Ver. 1 (October, 2018) 88-92
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

मुँशी प्रेमचन्द के उपन्यासों का हिन्दी साहित्य में योगदान

डॉ. रीता शुक्ला
व्याख्याता, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बयाना, (भरतपुर)

सारांश

प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को निश्चित दिशा प्रदान की है। प्रेमचन्द के उपन्यास आज भी उतेन ही प्रासंगिक है जितने अपने दौर में रहें, बल्कि किसान जीवन की उनकी पकड़ और समझ हो देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। किसान जीवन के यथार्थवादी चित्रण में प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में अनूठे और जाजवाब रचनाकार रहे है। प्रेमचन्द का कथा साहित्य जितना समकालीन परिस्थितियों पर खरा उतरता है, उतना ही बहुत हद तक आज भी दिखाई देता है। उनकी रचनाओं में गरीब श्रमिक, किसान और स्त्री जीवन का सशक्त चित्रण दर्जनों उपन्यासों में हुआ है, 'सद्गति', 'कफन', 'पूस की रात' और 'गोदान' में मिलता है। 'रंगभूमि', 'प्रेमाश्रम' और 'गोदान' के किसान आज भी गाँवों में देखे जा सकते है साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचन्द का महत्त्व अतुलनीय है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी महत्त्व पर प्रकाश डालने हेतु लेखक द्वारा प्रेमचन्द के उपन्यासों का हिन्दी साहित्य में महत्त्व का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

प्रेमचन्द के उपनाम से लिखने वाले ''धनपत राय श्रीवास्तव'' हिन्दी और उर्दू के महानतम भारीतय लेखकों में ऐ एक है। उन्हें मुंशी प्रेमचन्द व नवाब राय के नाम से भी जाना जाता है। उन्हें उपन्यास समग्राट के नाम से भी नवाजा गया था। इस नाम से उन्हें सर्वप्रथम बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने संबोधित किया था।

प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास की एक ऐसी परंपरा को विकसित किया जिसने पूरी शताब्दी में साहित्य का मार्गदर्शन मिलता है। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। वे एक संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा सुधी संपादक थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में, जब हिन्दी में की तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, उनका योगदान अतुलनीय है।

प्रेमचन्द के भारत के उपन्यास सम्राट कहा जाता है, जिनके युग का विस्तार सन् 1880 से 1936 तक है। यह कालखण्ड भारत के इतिहास में बहुत महत्त्व का है। इस युग में भारत का स्वतंत्रता–संग्राम नई मंजिलों से गुजरा। प्रेमचन्द का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्त, जिम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवी शती के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएँ नहीं थी फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ। (गुप्त, प्रकाशचन्द (1984) प्रेमचन्द भारतीय साहित्य के निर्माता, नई दिल्ली साहित्य अकादमी)

मुंशी प्रेमचन्द का जीवन परिचय

प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गाँव में 41 जुलाई, 1880 को हुआ। प्रेमचन्द के पिताजी मुंशी अजायब लाल और माता आनन्दी देवी थी। प्रेमचन्द का बचपन गाँव में बीता था। वे नटखट और खिलाडी बालक थे और खेतों से शाक–सब्जी और पेड़ों से फल चुराने में दक्ष थे। उन्हें मिठाई का बड़ा शौक था और विशेष रूप से गुढ़ स उन्हें बहुत प्रेम था। बचपन में उनकी शिक्षा–दीक्षा लमही में हुई और एक मौलवी साहब से उन्होंने उर्दू और फारसी पढ़ना सीधी। एक रुपया चुराने पर 'बचपन' में उन पर बुरी तरह मार पड़ी थी। उनकी कहानी, 'कज़ाकी', उनकी अपनी बाल–स्मृतितियों पर आधारित है। कज़ाकी डाक–विभाग का हरकारा था और बड़ी लम्बी–लम्बी यात्राऐं करता था। वह बालक प्रेमचन्द के लिए सदैव अपने साथ कुछ सौगात लाता था। कहानी में वह बच्चे के लिये हिरण का छौना लाता है और डाकघर में देरी से पहुँचने के कारण नौकरी से अलग

कर दिया जाता है। हिरन के बच्चे के पीछे दौड़ते–दौड़ते वह अति विलम्ब से डाकघर लौटा था। कज़ाकी का व्यतिव अतिशय मानवीयता में डूबा है। वह शालीनता और आत्मसम्मान का पुतला है, किन्तु मानवीय करुणा से उसका ह्रदय भरा है।

प्रेमचन्द की जीवनदृष्टि

प्रेमचन्द की रचनाएँ ही उनकी कृति या रचना–व्यक्तित्व की प्रामाणिक साक्ष्य है। इसका मतलब यह नहीं है कि रचनाओं से बाहर के जीवन का उनके व्यक्तित्व से कोई सम्बन्ध नहीं। दरअसल प्रेमचन्द जो जीवन में थे, उससे ज्यादा साफ और गहरे वे रचनाओं में मिलते हैं। उनकी कृतियाँ दो महायुद्धों के बीच के विराट मानव–सन्दर्भों की रचनाएँ है। वे रचनाएँ रचनाकाल के दृश्य संसार की संघर्षमय जीवन की सच्ची–झूठी गाथाएँ ही नहीं है, बल्कि प्रेमचन्द के व्यक्तित्व की परिचय–कथाएँ है। प्रेमचन्द का अपना निजी जीवन कहीं–न–कहीं उस बड़े सन्दर्भ से जुड़ा हुआ है। उनके निजी जीवन के बारे में 'कलम का सिपाही', और 'कलम का जादूगरः प्रेमचन्द' जैसी कृतियों से सूचनाएँ मिलती है।

उनके लिखे पत्र और उनके बारे में समकालीन लेखक– आलोचकों की सूचनाऐं हमें मिलती है वे यह स्पष्ट करती हैं कि भारतीय स्वाधीनता–संग्राम के संघर्ष में लेखक से बाहर की भी हिस्सेदारी प्रेमचन्द ने निभायी थी। वह एक आदमी की हैसियत से भागीदार बनने से सम्बद्ध है। एक आदमी की हैसियत से अपनी सामर्थय के अनुसार प्रेमचन्द ने 'कलम के हथियार' से लड़ाई में भाग लिया था। दूसरे क्षेत्रों में उन छोटे पात्रों की हैसियत से भग लिया था जो भारतीय–जन–मानस को उस 'शक्ति' से परिचित कराते हैं जो शक्ति सामाजिक सन्दर्भों को बदलने में समर्थ हैं।

कृतियों में जो 'अनुभव' प्रेमचन्द ने दिया था वह अनुभव केवल कलात्मक विलास के अनुभव नहीं था, वह जीवन का 'मानवीय' अनुभव भी था। परन्तु निजी जीवन के अनुभव और सार्वजनिक जीवन के अनुभव में फर्क होता है। किसी रचनाकार का निजी जीवन ही रचनाओं में झलकता हो, ऐसा स्वीकार नहीं किया जा सकता। बहुत सारे रचनाकारों के जीवन और उनके सर्जनात्मक कर्म की आधार भूमि में जमीन–आसमान का अन्तर होता है। अनेक उदाहरणों में तो यह एकदम उल्टा भी होता है। निजी जीवन का अनुभव व्यक्तिगत रुचि–अरुचि तक में सीमाबद्ध होता है जबकि अनुभवों की विषयगत प्रवृत्ति में ऐसी सीमा नहीं होती है। यह विचित्र संयो है कि प्रेमचन्द निजी जीवन के अनुभवों और रचनाओं के बीच प्रवाहित होने वाले अनुभवों में ज्यादा फर्क नहीं है। बल्कि यह अद्‌भुत समानता है कि प्रेमचन्द के जीवन ही की प्रमुख घटनाएँ या उनके जीवन–काल में हुई प्रमुख घटनाएँ उनकी कथाओं में मिल जाती है।

हिन्दी साहित्य का परिचय

हिन्दी साहित्य हिन्दी भाषा का रचना संसार है। हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़े प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा में तलाशी जा सकता है। परन्तु हिन्दी साहित्य की जड़े मध्ययुगीन भारत की ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली और मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य में पाई जाती है। हिन्दी में गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ और इसने अपनी शुरूआत कविता के माध्यम से जो कि ज्यादातार लोकभाषा के साथ पव्रयोग कर विकसित की गई। हिन्दी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है। गद्य, पद्य और चम्पू। हिन्दी की पहली रचना कौन सी है इस विषय में विवाद है लेकिन ज्यादातर साहित्यकार देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखे गये उपन्यास 'चन्द्रकांता' को हिन्दी की पहली प्रमाणिक गद्य रचना मानते है। साहित्य अविरल धारा की तरह होता है, जो निरन्तर आगे बढ़ता है। उसमें न कोई रुकावट आती है और न ही कोई उसे कोई बाधित करता है। समय के साथ–साथ उसमें परिवर्तन आते रहते है और परिवर्तन के अनुरूप साहित्य को नयी प्रवृत्तियाँ, नयी दिशाएँ मिलती है। हिन्दी साहित्य का आरम्भ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे–छोटे शासन केन्द्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत रहा करते थे।

मुसलमानों से भी इनकी टक्कर होती रहती थी। हिन्दी साहित्य के अब तक लिखे गए इतिहासों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखे गये 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' को सबसे प्रमाणिक तथा व्यवस्थित इतिहास माना जाता है। आचार्य शुक्ल जी ने इसे 'हिन्दी शब्द सागर की भूमिका' के रूप में लिखा था जिसे बाद में स्वतंत्र पुस्तक के रूप में 1929 ई. में प्रकशित आंतरित कराया गया। हिन्दी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है– गद्य, पद्य और चम्पू। जो गद्य और पद्य दोनों में हो उसे चम्पू कहते है। खड़ी

बोली की पहली रचना कौन–सी है, इस विषय मे विवाद है लेकिन अधिकांश साहित्यकार लाला श्रीनिवास द्वारा लिखे गये उपन्यास 'परीक्षा गुरू' को हिन्दी की पहली प्रमाणिक गद्य रचना मानते है।

मुंशी प्रेमचन्द का साहित्यिक जीवन

प्रेमचन्द व्यवहार में बहुत ही सरल एवं स्वभाव के दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। साहित्य के क्षेत्र में इन्हें बचपन से ही रुचि थी। जब उर्दू उपन्यास और लघु कथाएँ लिखेन की बात आती है, तो प्रेमचन्द का अपना एक विशेष स्थान अवश्य होता है। उपन्यास लिखेन की उनकी शैली राजाओं और रानियों की काल्पनिक कहानियों के रूप में शुरू हुई। लेकिन जैसे–जैसे वे अपने आस–पास हो रही घटनाओं के प्रति जागरूक होते गए। उन्होंने सामाजिक समस्याओं पर लिखना शुरू किया और उनके उपन्यासों ने सामाजिक चेतना और जिम्मेदारी की भावना को जगाने का काम किया था। उन्होंने जीवन की वास्तविकताओं और एक अशांत समाज में आम आदमी द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में बहुत ही बारीकी से लिखा।

उनका मुख्य ध्यान ग्रामीण भारत और जमींदारों, कर्जदारों आदि के हाथों एक साधारण गरीब ग्रामीण द्वारा सामना किए जाने वाले शोषण पर रहा। उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों की एकता पर भी जोर दिया। उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ, गोदान, गबन, कर्मभूमि, प्रतिज्ञा आदि है। उनकी प्रसिद्ध लघु कथाओं में आत्माराम, उधार की घड़ी, बड़े घर की बेटी आदि जैसे लोकप्रिय नाम शामिल हैं। उनकी कुछ कार्यों को प्रसिद्ध फिल्म निर्माता सत्यजीत रे द्वारा फिल्मों में भी बनाया गया था।

प्रेमचन्द केवल एक मनोरंजक लेखक ही नहीं थे अपितु वे हिन्दू एवं उर्दू भाषा में अपनी दक्षता के लिए भी प्रसिद्ध थे। उर्दू भाषा पर उनकी पकड़ ने उन्हें एक प्रतिभाशाली पत्रकार की प्रतिष्ठा दिलाई। एक पत्रकार के रूप में उनका लेखन उस समय भारत में चल रहे स्वतन्त्रता आन्दोलन से बहुत प्रभावित था।

अपने लेखन में वे स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने की इच्छा व्यक्त करते थे। उन्होंने सोज़–ए–वतन नामक लघु कथाओं की एक पुस्तक संकलित की, जो उस समय की चल रही देशभक्ति से प्रभावित थी। प्रेमचन्द के इस कार्य को विद्रोही और साहसी प्रकृति का माना जाता था। यह पुस्तक कई भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिए उकसाने में जिम्मेदार थी। इसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार की ओर से कठोर प्रतिक्रिया हुई। सरकार ने सोज़–ए–वतन पर कब्जा कर लिया और उसकी सभी प्रतियां जला दीं।

प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य में यथार्थवाद लाया, जिसे उस समय हिन्दी साहित्य में क्रान्तिकारी विकास माना जाता था, उन्होंने पहले अधिकांश लेख, काल्पनिक कहानियों या धार्मिक और पौराणिक कहानियाँ पर लिखे थे। वह समाज सुधारक और दूरदर्शी थे। उन्होंने अपनी कहानियों में वास्तविकता और यर्थादवादी स्थितियों का भरपूर प्रयोग किया। उनके सभी पात्र वास्तविक समस्याओं और वास्तविक लोग थे। वे उस समय के आसपास भरत में मौजूद सामाजिक बुराईयों के बारे में लिखे थे। इन सामाजिक बुराईयों में शामिल है– दजेह, गरीबी, उपनिवेशवाद, भ्रष्टाचार, जमींदारी आदि थे।

क्र.सं.	मुंशी प्रेमचन्द की प्रमुख कहानियाँ	मुंशी प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यास
1.	दुनिया का सबसे अनमो रतन	रंगभूमि (1925)
2.	सप्त सरोज	निर्मला (1927)
3.	प्रेम–द्वादशी	गबन (1931)
4.	समरयात्रा	कर्मभूमि (1932)
5.	मानसरोवरः भाग एक व दो	गोदान (1936)
6.	कफन	हमखुर्मा व हमसवाब

7.	नवनिधि	सेवासदन (1918)
8.	प्रेम पूर्णिमा	बाजारे–हुस्न (ऊर्द)
9.	प्रेम–पचीसी	प्रेमाश्रम (1921)
10.	प्रेम–प्रतिमा	मंगलसूत्र प्रेमचन्द का अधूरा उपन्यास है

मुंशी प्रेम चन्द के साहित्य की विशेषताएँ

प्रेमचन्द की रचना–दृष्टि विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई है। वह बहुमुखी सम्पन्न साहित्यकार थे। प्रेमचन्द की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ है। अपनी महानियों से प्रेमचन्द मानव–स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते है। 'बड़े घर की बेटी', आनन्दी, अपने देवर से अप्रसन्न हुई, क्यांकि वह गंवार उससे कर्कशता से बोलता है और उस पर खींचकर खड़ाऊँ फेंकता है। जब उसे अनुभव होता है कि उनका परिवार टूट हरा है और उसक देवर परिताप से भरा है, त बवह उसे क्षमा कर देती है और अपने पति को शांत करती है। इसी प्रकार 'नमक का दरोगा' बहुत ईमानदार व्यक्ति है। घूस देकर उसे बिगाड़ने में सभी असमर्थ है। सरकार उसे सख्ती से उचित कार्यवाही करने के कारण, नौकरी से बर्खास्त कर देती है, किन्तु जिस सेठ की घूस उसने अस्वीकार की थी, वह उसे अपने यहाँ ऊँचे पद पर नियुक्त करता है। वह अपने ईमानदार और कर्त्तव्यपरायण कर्मचारी रखना चाहता है।

इस प्रकार प्रेमचन्द के संसार में सत्कर्म का फल सुखद होता है। वास्वविक जीवन में ऐसी आश्चर्यप्रद घटनाएँ कम घटती है। गाँव का पंच भी व्यक्तिगत विद्वेष और शिकायतों को भूलकर सच्चा न्याय करता है। उसकी आत्मा उसे इसी दिशा में ठेलती है। असंख्य भेदों, पूर्वाग्रहों, अन्धविश्वासों, जाता–पांत के झगड़ों और हठधर्मियों से जर्जर ग्राम–समाज में भी ऐसा न्याय–धर्म काल्पनातीत लगता है। हिन्दी में प्रेमचन्द की कहानियों का एक संग्रह बम्बई के एक सुप्रसिद्ध प्रकाशन गृह, हिन्दी ग्रन्थ–रत्नाकर ने प्रकाशित किया। यह संग्रह 'नवनिधि' शीर्षक से निकला और इसमें 'राजा हरदौल' और 'रानी सारन्धा' जैसी बुन्देल वीरता की सुप्रसिद्ध कहानियाँ शामिल है।

हिन्दी उपन्यास में मुंशी प्रेमचन्द का महत्त्व

हिन्दी में उपन्यास साहित्य का विकास अंग्रेजी उपन्यासों के प्रभावस्वरूप हुआ। आधिुनिक हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं की भांति इसका विकास भी भारतेंदु युग से होता है। पर इस विधा का पूर्ण परिपाक प्रेमचन्द की रचनाओं में मिलता है। प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यास की साहित्य–यात्रा विविधमुखी है ओर आज भी यह गद्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। भारतेंदु युग में हिन्दी–उपन्यास का प्रारम्भ बंगला उपन्यासों के अनुवाद के रूप में हुआ। भारतेंदु का 'पूर्ण प्रकाश' और 'चन्द्रप्रभा' उपन्यास अनुवाद ही है। हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा–गुरु' माना जाता है, लेकिन आचार्य रामचन्द्र शुल्ल श्रद्धाराम फिल्लौरी कृत 'भाग्यवती' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानते है। ये दोनों सामाजिक उपन्यास है। इनके बाद भारतेंदु की अधूरी कृति ''आपबीती–जगबीती'' को मौलिक उपन्यास माना जाता है। भारतेंदु युग के प्रतिष्ठित उपन्यासकारों में जगमोहन सिंह (श्यामा स्वप्न), बालकृष्ण भट्ट (नूतन ब्रह्मचारी , सौ अजान एक सुजान), देवी प्रसाद उपाध्याय (सुन्दर सरोजनी), राधकृष्ण दास (निःसहाय हिन्दू), किशोरी लाल गोस्वामी (लवंगलता, कुसुम कुमारी), बालमुकुंदगुप्त (कामिनी) आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इन सामाजिक उपन्यासों के अतिरिक्त इस युग में कुछ ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे गए, पर इनमें इतिहास कम ऐयारी अधिक है। ब्रजनंदन सहायकृत 'लालचीन' और मिश्रबंधुओं का 'वीरमणि' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। लालचीन गयासुद्धीन बलवन के एक गुला की कहानी है और वीरमणि, अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ पर की गयी चढ़ाई का कल्पना–मंडित विवरण है। इस युग में मौलिक उपन्यासों से ही अधिक अनुदित उपन्यासों की भरमार रही। मौलिक और अनुदित उपन्यासों की यह परम्परा भारतेंदु

युग से द्विवेदी युग तक फैली चली आती है। इन उपन्यासों के बाद हिन्दी में तिलिस्मी और जासूसी उपन्यासों की धूम–सी मच गयी। देवकीनंदन खत्री ने चंद्रकांता, चंद्रकांतासंतति तथा भूतनाथ (अपूर्ण) जैसे जासूसी और ऐयारी से भरे उपन्यास लिखे। इन अद्‌भुत उपन्यासों को पढ़ने के लिए किने ही लोगों ने हिन्दी पढ़ी। देवकीनन्दन खत्री के पुत्र दुर्गाप्रसाद ने अपने पिता के कार्य को आगे बढ़ाया– रक्तमण्डल, लालपंजा, प्रतिशोध, सफेद शैतान आदि इनकी कृतियाँ है। गोपालराम गहमरी, देवी प्रसाद शर्मा, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी तथा किशोरी लाल गोस्वामी आदि ने इस प्रकार के उपन्यास लिखे। प्रेमचन्द और जासूसी उपन्यासों की कड़ी के रूप में हरिऔध ओर लज्जाराम मेहता को लिया जा सकता है। हरिऔध के 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूल' उपन्यास तथा मेहता के 'आदर्श हिन्दू' और 'हिन्दू गृहस्थ' उल्लेखनीय है।

संक्षेप में प्रेमचन्द–पूर्व के उपन्यास विषयवस्तुत तत्व और भाषा सभी दृष्टियों से बिखरे हुये और अनेकरूपता लिए हुए है। अधिकतर उपन्यासों की रचना सामाजिक उपदेशों या फिर कुतूहल की ही दृष्टि से हुई। सभी उपन्यासों में कथोपकथन शैली का अभाव और वर्णनात्मकता की प्रधानता है।

निष्कर्ष

यह निश्चित ही है कि प्रेमचन्द 'मनुष्यता' के अमर कथाकार थे। जब तक समाज में अनीति, अन्याय, अत्याचार और अविचार है तब तक इनकी कृतियों मशाल का काम देंगी और जब मुक्ति से प्रकाश से मनुष्यता का मुख उज्ज्वल होगा, तब वे शोषित–पीड़ित जनता की जीवन गाथा से उसके जीवन व्यापी संघर्ष से हमारा परिचय कराती रहंगी। प्रेमचन्द का जीवन तपस्वियों के सदृश था साहित्य–सेवा के लिए ही उनका जीवन था। साहित्य के लिए उन्होंने जीवन र्प्यन्त लेखनी को अलग न किया। वे एक सफल तथा सच्चे उपन्यासकार माने जाते हैं। इस बात का निर्णय उनके साहित्य अथवा उनके उपन्यासों से हो जाता है।

प्रेमचन्द चतुर्दिक व्याप् समाज में घटित और उसमें संलिप्त व्यक्तियों से प्रेरित होकर ही साहित्य सृष्टि करते है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में सामाजिक जीवन अने समस्त सम्बन्धों, जटिल प्रश्नों और समस्याओं, आशा–आकांक्षाओं के साथ उभरा है, इसीलिए उनके पात्र विशेषतः सामाजिक या वर्गीय पात्र है। लेखक इन पात्रों की विशेषताओं को खूब उबारता है, उनसे उनका व्यक्त्वि निर्मित करता है और परिस्थितियों के प्रवाह में उठते–गिरत उस पात्र की मन स्थितियों का आंकलन करता है। लेखन ने उन पात्रों के सामाजिक रूप और सामाजिकता से सम्बन्धित मनःसत्यां के उद्‌घाटन पर विशेष बल दिया है।

सन्दर्भः–

1. संजय जोशी, फ्रैक्चर्ड मार्डनिटी, ओ यू पी., 2001, पृ.05
2. दास श्याम सुन्दर (1982), भारतीय मध्यवर्ग, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, पृ.58
3. प्रो. चन्द्रवंशी डी.पी. (2015), '''हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द का योगदान'' रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज एंड सोशल साइंसेस।
4. देवी, बाला (2018), हिन्दी उपन्यास और भारतीय समाज का मध्यवर्ग, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाई एजुकेशन, खंडः14, अंकः2, डीओआईः10.29070/जेएएसआरएई।
5. प्रेम चन्द, समालोचक, पृष्ठ 25 (1925)
6. यादव चित्रा (2019), मुंशी प्रेमचन्द का हिन्दी साहित्य में योगदान– एक समीक्षा, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाई एजुकेशन, वॉल्यूम, अंकः5, डीओआईः10.29070/जेएएसआरएई। चन्द, समालोचक, पृष्ठ 25 (1925)
7. गुरुचैन सिंह (2007), दि न्यू मिडल क्लास इन इंडियाः ए बायोग्राफिकल एनालिसि, रावत पल्किेशन, पृ.19, जयपुर।
8. लाल बहादुर वर्मा (1998), यूरोप इतिहास, खंड–1, प्रकाशन संस्थान।